Concept of Indian culture

Course -- M.A, Education,Part -1

Paper--- 3rd, Philosophical Foundation of Evaluation

Prepared by -- Dr Meena Kumari

Topic- Concept of Indian Culture

भारतीय संस्कृति की अवधारणा

1) प्रस्तावना --- समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए व्यक्तियों ने अपनी व्यवस्था को संरक्षित तथा स्थापित करके रखता है।भारतीय समाज, संस्कृति और अनुशासन यह पिछले 5000 साल से भारत के मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। भारत, भारतीय और भारतीयता यह एक जीवनशैली ही नहीं एक जीवन जीने का एक ढंग है। यहां के वेद और पुराण उपनिषद में ही का आदर्श जीवन शैली जीने की कला सिखाई नहीं गई है बल्कि हमारे बुजुर्गों ने हमें एक आदर्श भारतीय जीवन जीने के तरीकों को सिखाया है। जब से मानव काल है तब से हमारा भारत है । हमारे संस्कृति का अभिन्न अंग है समरसता तथा दान और पुण्य है।

2,)संस्कृति का अर्थ ----संस्कृति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है परिष्कृत। ऐसे तत्व और प्रक्रिया जो व्यक्तियों को परिष्कृत कर दे या निर्मल कर सके।

१) सम उपसर्ग जब कृ में कितन प्रत्यय लगाकर संस्कृत का यह शब्द बना है । कृ अर्थ होता है करना, इस रूप में संस्कृति का अर्थ है अच्छी प्रकार से किया गया कार्य संस्कृति है ।

२) संस्कृति शब्द संस्कार से बना मानने पर इसका अर्थ 'शुद्धि की क्रिया'। सामाजिक सुचेता की प्रक्रिया अर्थात व्यक्ति को एक सामाजिक प्राणी बनाने में जितने भी तत्वों का योगदान होता है ,उन सभी तत्वों की व्यवस्था को संस्कृति कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा जब एक जैविक प्राणी एक सामाजिक प्राणी में परिष्कृत होता है।

कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्नवत है ------

टाइल्ररस के अनुसार संस्कृति वह जटिल संपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें ज्ञान, विश्वास ,अाचार ,कानून, प्रथा तथा इसी प्रकार की समाधि क्षमताएं और आदतों का समावेशन रहता है ,जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।

अोटावे के अनुसार किसी समाज की संस्कृति से अर्थ उस समाज के संपूर्ण ढंग से होता है।

वुडवर्थ -- संस्कृति में वह प्रत्येक वस्तु सम्मिलित है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जा सकती है ।किसी जन समुदाय की संस्कृति उसकी सामाजिक विरासत होती है।

क्यूबर के अनुसार मानव विकास के शब्दों में संस्कृति सीखे व्यवहारों को परिणामों के सतत परिवर्तनशील को कहते हैं ।सीखे हुए व्यवहारों में अभिवृत्तियां ,आदर्श ज्ञान एवं भौतिक पदार्थ सम्मिलित होते हैं जिन्हें समाज के सदस्य आपस में एक दूसरे को प्रदान कर देते हैं।

3) संस्कृति के प्रकार --- संस्कृति के प्रकृति तथा उपयोग के अनुसार यह दो प्रकार होते हैं ----

१) भौतिक संस्कृति --- भौतिक संस्कृति में उन सभी पदार्थों को सम्मिलित करते हैं जिनका उपयोग एक समाज के सदस्य करते हैं और अपने पास रखते हैं ।इसके अंतर्गत वे सभी वस्तुएं आ जाती है जिनका स्वरूप मूर्त है तथा जिनका निर्माण मनुष्य ने किया है। उदाहरण स्वरूप-- मकान, सडक,मशीन, टेलीविजन, एसी,कपड़ा,सभी तरह के गजट इत्यादि।

२) अभौतिक संस्कृति -- यह संस्कृति विचारों में निहित होती है ।इसके अंतर्गत वे सभी बातें आती है जिनका स्वरूप अमूर्त है और जिसका विकास मनुष्य के सामाजिक रूप में रहने के लिए होता है। इस को मापना सरल नहीं है ।इसको ग्रहण करना भी आसान नहीं होता है । भौतिक संस्कृति की अपेक्षा अधिक स्थाई होती है उदाहरण स्वरूप सामाजिक विरासत, विचार, विश्वास ,मानदंड ,व्यवहार ,रीति रिवाज ,कानून ,मनोवृति या साहित्य ज्ञान, कला भाषा, नैतिकता एवं क्षमताएं सभी संस्कृति के अंतर्गत आते हैं।

4)भारतीय संस्कृति की विशेताएं----

१) आदर्श जीवन --- दुनिया जब आदिम लोग के रूप में संघर्ष कर रही थी, उस समय यहां के ऋषिओ ने कहा था, अंतरिक्ष शांति ,जलनिधि शांति, वनस्पति शांति, पूरी पृथ्वी पर शांति आदि।आज अंतरिक्ष को, दक्षिण ध्रुव को प्रदूषण से बचाने की बात हो रही है इस बात की हजारों साल पहले हमारे साधु संतों ने कर दी थी हमारे पूर्वजों ने आत्मा और परमात्मा के की बात की थी ,इसका तात्पर्य सिर्फ इतना था कि हम सभी एक ही पिता के भिन्न भिन्न रूप हैं फिर एक दूसरे से भेद कैसा। अर्थात पूरी दुनिया को एक परिवार के समावेश में देखा जाता था।

२) अध्यात्म --- आध्यमिक्तता भारतीय मस्तिष्क की कुंजी थी! भारतीय संस्कृति में दर्शन तथा धर्म को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है !इन दोनों का प्रभाव भारतीय संस्कृति में दिखता है! भारत में रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद अरविंदो ,रविंद्र नाथ टैगोर आदि महापुरुष हुए जिन्होंने भारत में वेदों, शास्त्र एवं धर्म के वास्तविक रहस्य को बताया है।

३)भारतीय शिल्प कला

भारतीय शिल्प कला का प्राचीन इतिहास है। विश्व भर से लोग भारतीय कला के तरफ खींचे चले जाते है। सदियों से भारतीय शिल्प कला, विभिन्न देशों के लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करता रहा है। इतिहास में पीछे जाकर अगर हम देखें सप्त सिंधु सभ्यता, मौर्य काल, गुप्त काल, कुषाण काल, गुलाम वंश कॉल मुगल काल इत्यादि हमारे शिल्पकार ओने अनोखी तथा जैसे नया कृपया जैसे मिट्टी के पात्र पत्थरों से बने मनके मूर्तियां बुनाई मोहरे बनाते आए हैं । जब अंग्रेजों का शासन आया तो हमारे शिल्पकार का और शिल्प कला को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। आज 2020 में हमारे पारंपरिक शिल्पकार फिर से हमारी प्राचीन धरोहर को पुनर्जीवित करने में लगे हुए हैं और सरकार भी मदद कर रही है मगर यह हर एक भारतीय कि अपनी जिम्मेदारी है वह अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाए।

४) भारतीय त्योहार --4000 साल से भी पुराना हमारा भारत, त्योहार, मेले और जन उत्सव का देश रहा है। चाहे आप भारत में कहीं भी हो, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, कर्नाटका से कोहिमा तक, हर दिन एक ना एक त्योहार मनाया जाता है। जैसे बिहार में छठ पूजा, पंजाब हरियाणा दिल्ली में गुड़ी पाडवा, महाराष्ट्र में गणेश पूजा, तमिलनाडु में जलीकट्टू, केरला में पूनम, प्रत्येक राज्य और उनके प्रत्येक और अनोखी उत्सव। अगर से भारत के संदर्भ में हम देखें हमारी भारतीयता का महत्वपूर्ण अंग हमारे त्योहार हैं। एक साधारण भारतीय परिवार अपने मिट्टी को अपने त्योहारों से याद रखता है। उतना ही नहीं हमारे त्योहार हमारे मौसम हमारी ऋतु फसल की कटाई पूर्णिमा का स्वागत नई बहू का स्वागत नई पुतली का स्वागत के लिए एक अपना अलग जोहार होता है। भारत सिर्फ धर्म पर आधारित एक देश नहीं है, वह अपने धर्म को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखता है, पड़ता है रोजमर्रा जिंदगी में इसको अपनाता है। भारत के त्योहार भारत के आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के विस्तार के रूप में है।

५) भारतीय पकवान -- हमारे महान देश की खास बातों में से एक है भारतीय पकवान। इसमें इस्तेमाल किए जाने वाले अनोखे मसाले, बूटियां और सामग्री दुनिया भर में अपने वर्चस्व का झंडा फैला चुकी है। भारत के हर प्रदेश में अपना खाना और अपना खाने का तरीका होता है। यहां पर इस्तेमाल होने वाली सामग्री उसी प्रदेश में इस्तेमाल होती है। दक्षिण भारतीय खाना, पंजाबी खाना, मुगलई आहार कुछ सबसे प्रचलित खानपान में से एक है। भारतीय पकवानों की ख्याति दूर दूसरे देशों में है और जब यह पर्यटक भारत में आते हैं तो बड़े ही चाव से यहां के खाने का लुत्फ़
उठाते हैं। अपने भौगोलिक समावेश के कारण भारत के सभी राज्यों में मौसम रितु बिल्कुल ही एक दूसरे से भिन्न होती है। और यहां पर बनने वाला खाना विभिन्न होता है। भारतीय पकवानों को पर एक दृष्टि डाला जाए तो हम एक अनोखी बात यह भी देखेंगे की जब दूसरे देश से लोग भारत में आए, तो भारतीय खानों का स्वरूप भी बदला। पर्शिया से आए लो पारसी लोग, एंग्लो इंडियन ने भी भारतीय खाने को अपने रूप से एक आकार प्रदान की। आगे भी जिस तरह से टेक्नोलॉजी लोगों को जोड़ रहा है, भारतीय खाने के स्वरूप को भी नया आकार और नया स्वरूप दे रहा है।

६) भारतीय पोशाक -- पोशाकों का इतिहास पर एक नजर डाला जाए तो हम पाएंगे की सप्त सिंधु घाटी में कपास यानी घूमती कपास, भुने हुए रंग उपयोग में थे। कई जगह भारत में खुदाई के बाद यह सबूत मिलते हैं। प्राचीन भारतीय पोशाकों के बारे में प्राचीन यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस का यह कहना था कि भारतीय समाज में उस समय जानवरों से जैसे कि भैरव से निकला हुआ उन का काफी इस्तेमाल हुआ करता था। अगर भीमबेटका, अजंता एलोरा जैसे प्राचीन गुफाओं को देखें तो हमें भारतीय वस्त्र पहने जाने का प्रावधान दिखेगा। मगर भारतीय पोशाकों में एक ऐसा पोशाक है जोकि सिर्फ और सिर्फ भारत की ही पहचान है और समस्त विश्व इस पोशाक को स्नेह और इज्जत की निगाहों से देखता है। सारी वह वस्त्र है जो अब भारतीय समाज से निकलकर अमेरिका के नागरिक के कमरों में पहुंच चुका

७) प्राचीनता -- भारत को हमेशा विश्व गुरु के नाम से संबोधित किया गया है। यह उपाधि हमारे प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का ही नतीजा है। विभिन्न सदियों में भारत विश्व का मार्गदर्शक बना रहा है। हमारे सनातन धर्म में पूरी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित किया है।हमारे देश और हमारे समाज की सबसे बड़ी धरोहर हमारा सनातन धर्म है। हमारे सनातन धर्म से जुड़ी रीति रिवाज और विभिन्न ढेर सारी परंपराएं सिर्फ हमारे

देश में ही नहीं, हमारे देश के बाहर भी लोगों को आध्यात्मिक स्तर और नैतिक मूल्य से इंसान को इंसान के साथ जोड़ता है। भारतीय धर्म भारतीय समाज के ही जैसा हमारी जिंदगी को जीवंत कर देता है। आज कौन ऐसा देश है जहां पर दिवाली या होली नहीं मनाई जाती। हमारे यहां की छोटी से छोटी परंपराएं जैसे स्वास्तिक का इस्तेमाल, अगरबत्ती का इस्तेमाल, चंदन का इस्तेमाल इत्यादि धीरे धीरे हर जगह अपनी खास अहमियत बनाते जा रहा है।

८) विविधता में एकता -- हमारे धर्म से संस्कृति पूर्ण रूप से वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है ।दुनिया की सभी भाषाओं का उद्गगम भारतीय संस्कृत भाषा से मानी गई है। यहां के भाषा, पोशाक,भोजन तथा पर्व में बहुत अधिक विविधता ग परंतु सभी लोग आपस में प्यार से रहते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि भारत की अनूठी तथा सुंदर संस्कृति जीवन को जीने की राह दिखाती है। इसके सभी काम ,रीति रिवाज वैज्ञानिक रूप से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद साबित होते हैं। आज नमस्ते जीवन का मूल मंत्र बन गया है। अतः, हम सभी भारतीयों का कर्तव्य है कि अपनी सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत को सहेज कर रखें और इस धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करें।